रजिस्ट्री सं० डी० 222

REGISTERED NO. D-222

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 46] नई दिल्ली, शनिवार, नवम्बर 13, 1965 (कार्तिक 22, 1887)

No. 46] NEW DELHI, SATURDAY, NOVEMBER 13, 1965 (KARTIKA 22, 1887)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

नोटिस

NOTICE

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 1 नवम्बर 1965 तक प्रकाशित किए गए थे :—

The undermentioned *Gazettes of India Extraordinary* were published up to the 1st November 1965 :—

अंक (Issue No.)	संख्या और तारीख (No. and Date)	द्वारा जारी किया गया (Issued by)	विषय (Subject)
148	No. 90-ITC (PN) dated 28th Oct. 1965.	Ministry of Commerce	Import policy for Newsprint White Printing Paper (Excluding laid marked paper) which contains mechanical wood pulp amounting to not less than 70% of the fibre contents S. N. 44/V for the year April 1965—March 1966.
	No. 91-ITC(PN)/65 dated 29th Oct. 1965.	Do.	Import of goods from U.S.A. under AID Loans—Submission of reports regarding claims arising out of supply of defective goods short landing damages etc. preferred on suppliers/Steamer companies/insurance companies.
	No. 92-ITC (PN)/65 dated 28th Oct. 1965.	Do.	Import of Packing and Wrapping paper (S. No. 160 /IV) During April 1965—March 1966 period.
	No. 93-ITC(PN)/65 dated 28th Oct. 1965.	Do.	Import policy for Tractor and off the road tyres, tubes and flaps excluding other types of tyres and tubes and flaps specified elsewhere falling under S. No. 41 (iii)/V during Apr. 1965—March 1966.
149	No. 94-ITC (PN)/65 dated 1st. Nov. 65.	Do.	Import of camphor falling under S. No. 131/IV of the I.T.C. Schedule Ban on.

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां प्रकाशन प्रबन्धक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांगपत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी। मांगपत्र प्रबन्धक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तारीख से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिएं।

Copies of the *Gazettes Extraordinary* mentioned above will be supplied on Indent to the Manager of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Manager within ten days of the date of issue of these Gazettes.

विषय-सूची
(CONTENTS)

	पृष्ठ (Pages)
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधीतर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	631
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से संबंधित अधिसूचनाएं	953
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधीतर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	61
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से संबंधित अधिसूचनाएं	575
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्टें	—

	पृष्ठ (Pages)
भाग II—खंड 3—उप-खंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाये और जारी किये गये साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं)	1723
भाग II—खंड 3—उप-खंड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ राज्य क्षेत्र के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाये और जारी किये गये आदेश और अधिसूचनाएं	3661
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश	279
भाग III—खंड 1—महालेखापरीक्षक, संघ लोक-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के संलग्न तथा अधीन कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	769
भाग III—खंड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिसें ..	409
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं ..	117
भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिसमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिसें शामिल हैं ..	2927
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिसें ..	213
पूरक सं० 46—	
6 नवम्बर 1965 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी संबंधी साप्ताहिक रिपोर्ट ..	1581
16 अक्तूबर 1965 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म, तथा बड़ी बीमारियों से हुई मृत्यु से संबंधित आंकड़े ..	1595

	Page
PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations and Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	631
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave, etc., of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	953
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions, issued by the Ministry of Defence	61
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave, etc., of Officers issued by the Ministry of Defence	575
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—
PART II—SECTION 3.—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including orders, bye-laws, etc. of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories)	1723
PART II—SECTION 3.—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories)	2661
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence	279
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	769
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Office, Calcutta	409
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	117
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	2927
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies	213
SUPPLEMENT No. 46—	
Weekly Epidemiological Reports for week-ending 6th November 1965	1581
Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week-ending 16th October 1965	1595

भाग I—खण्ड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधीतर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 30 अक्तूबर 1965

सं० 92-प्रेज/65—राष्ट्रपति पश्चिम बंगाल पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस तथा अग्निशमन सेवा पदक प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री ईश्वरमन राय,
सहायक कमाण्डेंट (स्थानापन्न),
भारतीय आरक्षित बटालियन,
पश्चिम बंगाल ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किया गया ।

17 मार्च, 1965 को रात्रि के 3.30 बजे के लगभग पाकिस्तानी सेना की एक यूनिट ने, जो स्वचालित हथियारों से लैस थी, कूच बिहार जिला में तीनबीघा नामक एक भारतीय संकीर्ण पथ की भारतीय चौकी पर जबरदस्त हमला कर दिया । श्री ईश्वरमन राय, सहायक कमाण्डेंट ने, जो उस जगह एक निरीक्षण दौरे पर गया था, चौकी की छोटी पुलिस टुकड़ी के साथ वहां की दो हलकी मशीनगनों को युद्धोपयोगी स्थान पर जमा कर शत्रु को आगे बढ़ने से रोक दिया । जबरदस्त गोलीबारी के दौरान श्री राय एक खाई से दूसरी खाई में जा-जा कर अपने जवानों को उत्साहित करते रहे । 18 मार्च को जब तीन बीघा से कुमुक पहुंची तब श्री राय ने महसूस किया कि यदि शत्रु के मोर्चे को टिकने के लिए अयोग्य न बना दिया गया तो वे भारतीय मोर्चे पर छा जायेंगे । उसने तीनबीघा को पार कर शत्रु के ठिकानों के पीछे की तरफ से जवाबी हमला करने का निर्णय किया । तदनुसार 18 मार्च की रात को उसने ऐसा प्रयत्न किया किन्तु शत्रु की जबरदस्त गोलाबारी के कारण सफल न हो सका । उसने अगली रात को भी दोबारा कोशिश की और दुश्मन की जबरदस्त गोलीबारी के बावजूद वह अपने जवानों के साथ जीकाबाड़ी पहुंचने में सफल हो गया । श्री राय ने दिन निकलने तक अपने मोर्चे को गुप्त रखा और तब शत्रु के मोर्चों पर गोलीबारी की । इससे आश्चर्य में पड़ कर, शत्रु ने अपने पूरी ताकत से जीकाबाड़ी में स्थित श्री राय के मोर्चे पर 3" मार्टारों, मझौली मशीनगनों तथा अन्य स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी की । श्री राय के अधीन छोटी पुलिस टुकड़ी नहीं झुकी और उसने साहस और दृढ़निश्चय के साथ शत्रु का मुकाबला किया ।

इस कार्यवाही में, भारतीय क्षेत्र की रक्षा के लिए बार-बार अपनी जान को संकट में डालकर श्री ईश्वरमन राय ने उत्कृष्ट वीरता, साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया ।

2. यह पदक राष्ट्रपति का पुलिस तथा अग्निशमन सेवा पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिया जा रहा है ।

M 321GI/65

सं० 93-प्रेज/65—राष्ट्रपति पश्चिम बंगाल पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिये राष्ट्रपति का पुलिस तथा अग्निशमन सेवा पदक प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री सुर्जन सिंह गिल,
पुलिस निरीक्षक (स्थानापन्न),
4 थी बटालियन, पश्चिम बंगाल राईफल्स,
पश्चिम बंगाल ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किया गया ।

पाकिस्तानी लोगों तथा सैनिकों द्वारा अवैध घुसपैठ को रोकने के लिये तीनबीघा में एक अड्डा स्थापित करने के लिये श्री सुर्जन सिंह गिल, पुलिस निरीक्षक, को नियुक्त किया गया था । 13-14 मार्च की रात को असैनिकों तथा सशस्त्र सैनिकों की भारी संख्या तीनबीघा की भारतीय पुलिस चौकी की ओर बढ़ी और उसी समय पाकिस्तानी बस्ती डाहाग्राम से पाकिस्तानी सशस्त्र सैनिकों ने गोलीबारी शुरू कर दी । पुलिस ने जवाब में गोलियां चलाईं किन्तु असैनिकों को हताहत होने से बचाने के लिये श्री गिल को गोलीबारी रोकनी पड़ी और ऐसा करने पर घुसपैठियों की एक भारी संख्या तीनबीघा में सीमा पार कर के आ गयी । 17 मार्च, 1965 की रात के 3-30 बजे तीनबीघा की भारतीय पुलिस चौकी पर पाकिस्तानी सेना ने भारी हमला किया । श्री गिल के अधीन पुलिस की छोटी टुकड़ी ने गोलीबारी का प्रभावशाली जवाब दिया । बाद में सुबह श्री ईश्वरमन राय, सहायक कमांडेंट ने जो वहां निरीक्षण के लिये गये थे पुलिस चौकी की कमान सम्हाल ली । फिर भी श्री गिल शत्रु की भारी गोलाबारी के बावजूद संतरी चौकियों और टुकड़ियों पर गश्त लगाते रहे और छोटी पुलिस टुकड़ी को संख्या में अधिक शत्रुओं का मुकाबिला करने के लिये प्रेरित करते रहे । पुनः 19 मार्च की रात को शत्रु ने 3" मार्टारों तथा मझौली मशीनगनों से एक और हमला किया । यद्यपि पुलिस जवानों ने इससे पूर्व शत्रु द्वारा प्रयोग में लाये जाने वाले हथियारों का सामना नहीं किया था तथापि उन्होंने श्री गिल के सुयोग्य नेतृत्व में प्रभावशाली लड़ाई जारी रखी ।

जब श्री राय ने जीकाबाड़ी को पार कर पीछे से शत्रु के मोर्चे पर हमला किया, तब श्री गिल ने अपनी हलकी मशीनगन जमाकर इस प्रकार शत्रु को अपनी गोलियों से घेर लिया । जीकाबाड़ी चौकी से किसी प्रकार के संचार साधनों के अभाव में श्री गिल शत्रु की लगातार गोलीबारी से गुजर कर श्री ईश्वरमन राय से सम्पर्क स्थापित करने के लिये स्वयं गये । इस सारे समय श्री गिल अपनी मशीनगन की स्थिति बदल-बदल कर शत्रुओं पर नई-नई जगहों से हमला करते रहे । 29 मार्च, 1965 तक उन्होंने शत्रु के अगले मोर्चे पर पूरी तरह काबू पा लिया और उसकी दो निगरानी चौकियों को ध्वस्त करने में सफल हो गया । श्री गिल ने अपने असाधारण साहस नेतृत्व से न केवल पुलिस दल का मनोबल ही ऊंचा बनाये रखा अपितु वह तीनबीघा के मोर्चे को शत्रु के लिये अभेद्य बनाने में भी सफल रहे ।

2. यह पदक राष्ट्रपति का पुलिस तथ अग्निशमन सेवा पदक के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 29 मार्च, 1965 से दिया जायगा।

सं० 94-प्रेज/65—राष्ट्रपति पश्चिम बंगाल पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिये राष्ट्रपति का पुलिस तथा अग्निशमन सेवा पदक प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री केदार सिंह बिष्ट
पुलिस निरीक्षक **(स्थानापन्न)**
2 री बटालियन, राज्य सशस्त्र पुलिस, बैरकपुर,
पश्चिम बंगाल।

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किया गया

17 मार्च, 1965 को प्रातःकाल शत्रु सेना ने सीमा पार से पश्चिम बंगाल में मेकलीगंज और हल्दीबाड़ी के पास की सारी भारतीय सीमा पर आक्रमण किया। शत्रु के हमले का खास निशाना उसकी घुसपैठ रोकने के लिये स्थापित झाड़ सिंहेश्वर की अग्रिम चौकी थी। श्री केदार सिंह बिष्ट, पुलिस निरीक्षक ने, जिन्होंने एक दिन पूर्व चौकी का कार्यभार सम्हाला था, छोटे पुलिस दल को तुरन्त शत्रु के आगे बढ़ने को रोकने के लिये तैनात कर दिया। सीमा पार से भारी गोलीबारी के बावजूद, श्री बिष्ट ने इलाके की पड़ताल कर अपनी हल्की मशीनगनें जमानी शुरु कीं और 18 मार्च की आधी रात तक संचार खाइयां पूरी कर लीं। पौने तीन बजे रात के करीब शत्रु ने इस बाहरी-चौकी पर ब्रेनगनों, 2" और 3" मार्टारों तथा राइफल ग्रेनेडों से एक नया हमला किया। संख्या में अधिक शत्रुओं की भारी गोलीबारी की परवाह न करते हुये श्री बिष्ट ने पुलिस टुकड़ी की एकमात्र हल्की मशीनगन को लेकर अपनी ठीक निशानेबाजी के बल पर शत्रु को पीछे हटने पर विवश कर दिया। भारी गोलाबारी के दौरान श्री बिष्ट ने देखा कि शत्रु अपने 2" मार्टरों से पुलिस चौकी पर गोलाबारी करने के लिये एक बड़े सेमल के पेड़ की आड़ लिये हुये थे। भारी गोलीबारी के होते हुये वह अपने जवानों के साथ तुरन्त आगे बढ़ा और उस पेड़ को काट दिया। फुमुक तथा सप्लाई उपलब्ध नहीं थी और इस बात की पूरी सम्भावना थी कि शत्रु फुमुक के एकमात्र मार्ग को काटने के लिये नदी के किनारे पर आ सकता था। इसलिये श्री बिष्ट ने नदी पार कर के उस के दूसरे किनारे पर एक मोर्चा बनाने का निश्चय किया। श्री बिष्ट ने एक खाली नाव में अपने हथियार और गोलाबारूद भरा और अपने जवानों के साथ तैर कर रात में नदी पार की।

सीमा पार की सेना के साथ हुयी इस मुठभेड़ में श्री केदार सिंह बिष्ट ने व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक परवाह न करते हुये उत्कृष्ट वीरता, पहलशक्ति तथा उच्चतम स्तर की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. यह पदक राष्ट्रपति का पुलिस तथा अग्निशमन सेवा पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता दिनांक 20 मार्च, 1965 से दिया जायगा।

सं० 95-प्रेज/65—राष्ट्रपति पश्चिम बंगाल पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी उसकी वीरता के लिये राष्ट्रपति का पुलिस तथा अग्निशमन सेवा पदक प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री दलीप सिंह,
हैड कान्स्टेबल (स्थानापन्न),
3 री बटालियन, पश्चिम बंगाल राईफल्स, बैरकपुर,
पश्चिम बंगाल।

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किया गया।

पश्चिम बंगाल में कूच बिहार के नजदीक भारतीय सीमा पर गड़बड़ी के दौरान स्वचालित हथियारों से लैस पाकिस्तानी सेना की एक टुकड़ी ने तीनबीघा पर स्थित भारतीय चौकी पर एक भारी आक्रमण कर दिया। 19 मार्च, 1965 को सहायक कमाण्डेंट राय ने तीनबीघा से शत्रु के मोर्चों के पीछे एक स्थान पर पहुंचने और पीछे से शत्रु पर जवाबी हमला करने का फैसला किया। हैड कान्स्टेबल को अपनी प्लाटून के साथ अंधेरे में सातिरपुल की ओर बढ़ने का आदेश हुआ। हैड कान्स्टेबल दलीप सिंह ने साहसपूर्वक अपनी प्लाटून का नेतृत्व किया और शत्रु की भारी गोलीबारी के बावजूद सातिरपुल पर पहुंचने में सफल हो गया। सातिरपुल पर दिन गुजारने के बाद, हैड कान्स्टेबल दलीप सिंह फिर शत्रु के मोर्चे पर हमला करने के लिये जीकाबाड़ी रवाना हुआ। हैड कान्स्टेबल दलीप सिंह के जीकाबाड़ी पहुंचने के थोड़ी देर बाद, शत्रु ने भारत के सीमावर्ती गांव पर हमला किया और दो मकानों को आग लगा दी। हैड कान्स्टेबल दलीप सिंह ने अपने आदमियों में से आधों को लेकर तुरन्त जवाबी हमला किया और अपनी स्टेनगन से नजदीक से सही निशाने लगाकर शत्रु को खदेड़ दिया। हैड कान्स्टेबल दलीप सिंह के इस वीरतापूर्ण आक्रमण ने शत्रु को पुनः इस गांव पर हमला करने से रोक दिया। फिर भी 22 से 29 मार्च, 1965 तक शत्रु ने जीकाबाड़ी पर भारी गोलाबारी जारी रखी। कठिनाई के इन दिनों में हैड कान्स्टेबल दलीप सिंह ने अपने आदमियों का बड़ी योग्यता से नेतृत्व किया और भारतीय क्षेत्र में घुसने की शत्रु की हर कोशिश को निष्फल कर दिया।

इस प्रकार हैड कान्स्टेबल दलीप सिंह ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक परवाह न करते हुये उत्कृष्ट वीरता, पहलशक्ति तथा उच्चतम स्तर की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. यह पदक राष्ट्रपति का पुलिस तथा अग्निशमन सेवा पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 29 मार्च, 1965 से दिया जायगा।

सं० 96-प्रेज/65—राष्ट्रपति पश्चिम बंगाल पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिये पुलिस पदक प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री जोहान विलियम गुडआल,
कमाण्डेंट,
2 री बटालियन, पूर्वी सीमान्त राईफल्स,
पश्चिमी बंगाल,

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किया गया।

17 मार्च, 1965 को प्रातः कूच बिहार जिला में मेकलीगंज के भारतीय ठिकानों पर पाकिस्तानी सेना ने सीमा पार से स्वचालित हथियारों द्वारा भारी हमला किया। कमाण्डेंट जोहान गुडआल ने अनुभव किया कि फुलकादावाड़ी पर भारतीय सुरक्षा स्थिति कमजोर है और उन्होंने तुरन्त असैनिक स्वयंसेवक एकत्रित करके सुरक्षा की स्थिति को मजबूत किया ताकि उस खुले मोर्चे पर प्लाटून शत्रु के साथ होनेवाली लम्बी झड़पों का मुकाबिला कर सके। 17 और 18 मार्च को शत्रु ने भारतीय ठिकानों और उनके रसद पहुंचाने के रास्तों पर भारी गोलाबारी कर आगे बढ़ने की कोशिश की किन्तु उसकी इस कोशिश को छोटी पुलिस टुकड़ी ने निष्फल कर दिया। अगले दिन सशस्त्र असैनिकों ने सीमा पार कर के खड़खड़िया क्षेत्र में एक गांव को आग लगा दी। श्री गुडआल तुरन्त उस इलाके की तरफ गये और रास्ते में उन्होंने देखा कि पूर्वी सीमांत राइफल्स का एक दस्ता दो तरफ से ब्रेनगन की मार में घिरा हुआ था। श्री गुडआल ने तुरन्त सहायता मंगाई किन्तु इसी बीच सीमा पार से एक तीसरी ब्रेनगन ने छोटी पुलिस टुकड़ी पर हमला करके

उसकी स्थिति को संकटपूर्ण बना दिया । सहायता प्राप्त होने पर श्री गुडआल ने तीसरी ब्रेनगन को उठाये रखा और फंसी हुई पुलिस टुकड़ी को एक सुरक्षित स्थान पर हटने के लिये समर्थ कर दिया । बाद में श्री गुडआल को मेकलीगंज की पुलिस टुकड़ियों की कमान करने के लिये तैनात किया गया । श्री गुडआल ने अनुभव किया कि शायद शत्रु ने बाईं ओर से भारी गोलीबारी इसलिये की थी कि नदी पार से दाईं ओर से होने वाली घुसपैठ पर ध्यान न जाय । उन्होंने तुरन्त सीमा से मुश्किल से 150 गज़ दूरी पर नई चौकियां स्थापित कीं और शत्रु की भारी गोलीबारी के बावजूद इन चौकियों पर रसद भेजने में भी सफल रहे ।

इस सारी अवधि में श्री जोहान विलियम गुडआल ने उत्कृष्ट वीरता, नेतृत्व तथा उच्च स्तर की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिया जा रहा है ।

सं० 97-प्रेज./65—राष्ट्रपति पश्चिम बंगाल पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिये पुलिस पदक प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री रतन सिंह,
पुलिस निरीक्षक (स्थानापन्न),
5वीं बटालियन, पश्चिम बंगाल राईफल्स, बेरकपुर,
पश्चिम बंगाल ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किया गया

मार्च, 1965 में जब पाकिस्तानी सशस्त्र सेना ने सारी कूच बिहार सीमा पर आक्रमण किया तब श्री रतन सिंह, पुलिस निरीक्षक, बागडोगरा सीमा चौकी पर नियुक्त किये गये । 21 मार्च, 1965 को शत्रु ने भारतीय गांवों को लूटने और आग लगाने के लिये ब्रेनगनों की मार की छाया में सशस्त्र असैनिकों को भेजा । स्थिति की गम्भीरता का अनुभव करते हुए श्री रतन सिंह ने एक अन्य पुलिस निरीक्षक तथा दो पुलिस जवानों की सहायता से एक छोटा सा गुप्त स्थान बनाया और इन सशस्त्र असैनिकों को रोका और उन्हें हताहत किया । इतने में सीमा पार से नियमित पाकिस्तानी सेना की गोलियों की छाया में लगभग सौ सशस्त्र पाकिस्तानियों के एक और दस्ते ने सीमा में प्रविष्ट होने की चेष्टा की । श्री रतन सिंह ने इन सशस्त्र घुसपैठियों पर गोलीबारी की तथा उन्हें भारी संख्या में हताहत कर सीमा पार धकेल दिया । श्री रतन सिंह के इस वीरतापूर्ण कार्य ने भारतीय सीमा के उल्लंघन को रोक दिया । 22 मार्च, 1965 तक श्री रतन सिंह ने स्थिति पर पूरी तरह से काबू पा लिया । चौकी पर जाने वाली सड़क को शत्रु से सुरक्षित करने के बाद श्री रतन सिंह ने इलाके की जांच-पड़ताल की और ऐसी नई अग्रिम स्थितियां ढूंढीं जहां से शत्रु को खदेड़ा जा सकता था ।

इस अवधि के दौरान श्री रतन सिंह ने उत्कृष्ट साहस, नेतृत्व तथा सामरिक कुशलता का परिचय दिया ।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 22 मार्च, 1965 से दिया जायेगा ।

सं० 98-प्रेज/65—राष्ट्रपति पश्चिम बंगाल पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिये पुलिस पदक प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री निखिलेश दत्त,
पुलिस उप-निरीक्षक,
4थी बटालियन, पश्चिम बंगाल राईफ़ल्स
पश्चिम बंगाल ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किया गया

मार्च, 1965 को सीमा पार से सशस्त्र सेनाओं ने पश्चिम बंगाल में मेकलीगंज और हल्दीबाड़ी के निकट सारी भारतीय सीमा के साथ-साथ आक्रमण किया । शत्रु का खास निशाना झाड़ सिंहेश्वर पर घुसपैठियों को रोकने के लिये स्थापित की गई अग्रिम चौकी पर था । जब पुलिस दल शत्रु का सामना कर रहा था तब उनका गोला-बारूद और रसद का भण्डार करीब-करीब समाप्त हो गया था । श्री निखिलेश दत्त, पुलिस उप-निरीक्षक को अग्रीम चौकी पर गोला-बारूद और रसद ले जाने के लिये तैनात किया गया । शत्रु की बराबर भारी गोलीबारी के बावजूद वह 19 मार्च की सुबह अग्रिम चौकी पर अत्यावश्यक गोला-बारूद और रसद ले कर गए । श्री दत्त को ऐसी यात्राएं अनेकों बार करनी पड़ीं । जब आधार स्थान का कमांडर अग्रिम चौकी के लिये और बारूद न दे सका तब श्री दत्त शत्रु की भारी गोलीबारी के बीच हो कर कम्पनी कमांडर के लिये एक संदेश ले गए । उसी दिन दोपहर बाद जब अगली चौकी पर शत्रु ने मार्टारों तथा राईफल ग्रेनेडों से भारी गोलाबारी की तब अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल परवाह न करते हुए श्री दत्त को नदी पार कर एक संदेश उस चौकी पर ले जाना पड़ा । फिर 22 मार्च को जब पार मेकलीगंज सीमा की चौकी पर गोला-बारूद कम पड़ गया तब श्री दत्त उस चौकी के लिये गोला-बारूद ले गये ।

इस अवधि में श्री निखिलेश दत्त ने स्वयं को बराबर संकट में डालकर वीरता तथा उदाहरणीय कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 22 मार्च, 1965 से दिया जायेगा ।

सं०. 99-प्रेज/65—राष्ट्रपति पश्चिम बंगाल पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिये पुलिस पदक प्रदान करते हैं:—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री मैना राम कचारी,
हवलदार,
2री बटालियन, पूर्वी सीमान्त राईफल्स, मिदनापुर,
पश्चिम बंगाल ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किया गया

17 मार्च, 1965 की सुबह सीमा पार की सशस्त्र सेना ने पश्चिम बंगाल में मेकलीगंज और हल्दीबाड़ी के नजदीक सारी भारतीय सीमा पर हमला कर दिया । इस हमले के दौरान खड़-खड़िया की सीमा चौकी पर जो हवलदार मैना राम कचारी के अधीन थी, शत्रु ने भारी गोलाबारी की । हवलदार कचारी ने बचाव की व्यवस्था की और अपने अचूक निशाने के बल पर हमलावरों को उलझा कर उनकी गतिविधियों को रोक दिया । अगले दिन हमलावरों ने दो गांवों को आग लगा दी । आग को बुझाने के लिये हवलदार कचारी को खुले खेतों से गुजरना पड़ा और तब उसके दल को घेर लिया गया तथा उनको दो तरफ से ब्रेनगन से होने वाली भारी गोलाबारी का सामना करना पड़ा, यह छोटी पुलिस टुकड़ी शत्रु द्वारा खुले खेतों में वस्तुतः सम्बद्ध कर दी गई । इस संकट की स्थिति का अनुभव करते हुए हवलदार कचारी ने अपने दो जवानों को यह कहने के लिये खड़खड़िया भेजा कि ध्यान बंटाने के लिये गोलीबारी शुरू करें । कमाण्डेंट तुरन्त कुमक लाये और शत्रु पर भारी गोलीबारी कर उन्हें आश्चर्य में डाल दिया और फलस्वरूप शत्रु की गोलीबारी कुछ समय के लिये बन्द हो गई । इस चुप्पी का फायदा उठाते हुए हवलदार कचारी अपने जवानों के साथ सीमा चौकी पर वापस हटने में सफल हो गये ।

शत्रु सेना के साथ हुई इस मुठभेड़ में हवलदार मैना राम कचारी ने वीरता, नेतृत्व तथा उच्च स्तर की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 18 मार्च, 1965 से दिया जायेगा।

दिनांक 4 नवम्बर 1965

सं० 100-प्रेज/65—राष्ट्रपति बंगलौर के हिन्दुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड के फायर ब्रिगेड के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिये पुलिस पदक प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री पोन्नानी रामकृष्णन् वासुदेवन्,
कार्यभारी-अधिकारी, फायर ब्रिगेड,
हिन्दुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड, बंगलौर।

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किया गया।

5 फरवरी, 1964 को हिन्दुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड के इंजीनियरिंग विभाग के अंकों के अभिगणक कमरें में प्रतिदीप्त दीपों (लैम्पों) की चोक बहुत गर्म होने से आग लग गई। छत की बनावट और घने धुएं के कारण जो उस क्षेत्र पर छा गया था, आग लगने के कारण और उसके स्थान का आसानी से पता नहीं चल रहा था। इस स्थिति में तत्पर कार्रवाई की जरूरत थी, ताकि अंकों, के अभिगणक कमरे में मूल्यवान उपस्कर और उसके साथ लगी लाइब्रेरी को हानि होने से बचाया जा सके। श्री पोन्नानी रामकृष्णन वासुदेवन् ने तत्परता से आग की जगह तथा उसके कारण का पता लगा लिया तथा उसने आग बुझाने का कार्य ऐसे प्रभावशाली ढंग से संगठित किया कि पन्द्रह मिन्ट के भीतर आग पर काबू पा लिया गया। ऐसा करने में उसने न केवल कम्पनी की मूल्यवान सम्पत्ति को बचाया, बल्कि काम पर लगे हुए व्यक्तियों के जीवन के लिये सम्भव खतरे को भी टाल दिया।

इस कार्यवाही में श्री पोन्नानी रामकृष्णन् वासुदेवन् ने साहस तथा उच्च स्तर की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिया जा रहा है फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 5 फरवरी, 1964 से दिया जायेगा।

सं० 101-प्रेज/65—राष्ट्रपति पंजाब पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिये पुलिस पदक प्रदान करते हैं :

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री सुरेश चन्द्र,
सहायक पुलिस उप-निरीक्षक,
गुड़गांव जिला,
पंजाब।

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किया गया।

18 मार्च, 1963 को सायं श्री सुरेश चन्द्र, सहायक पुलिस उप-निरीक्षक को यह सूचना मिली कि बडखल गांव (जिला गुड़गांव) के इलाके में तीन कुख्यात डाकू मौजूद थे। श्री सुरेश चन्द्र ने कान्स्टेबलों की एक छोटी सी टकड़ी तथा स्थानीय लोगों को एकत्रित किया और तुरन्त बडखल की ओर रवाना हुआ। गांव में पहुंचने पर सहायक उप-निरीक्षक को पता चला कि डाकू करीब ही भांकरी के जंगल में चले गये थे। श्री सुरेश चन्द्र ने अपने दल के साथ सारे जंगल में खोज शुरू कर दी और डाकुओं को घबराई हुई हालत में ढूंढ़ लिया। उसने अपने दल को तीन टुकड़ियों में बांट कर मोर्चे जमाये। जब डाकुओं को आत्मसमर्पण के लिये कहा गया तो उन्होंने श्री सुरेश चन्द्र पर गोली चलाई पर वह बाल-बाल बच गया। जब पुलिस ने जवाब में गोलियां चलाई तो गिरोह का सरदार यासीन जो एक .303 की राइफ़ल से सशस्त्र था, श्री सुरेश चन्द्र की ओर झपटा। डाकू के दिलेराना और उद्दण्ड हमले की परवाह न करते हुए श्री सुरेश चन्द्र ने अपने रिवाल्वर से डाकू पर फुर्ती से गोली चलाई और उसे ज़ख्मी कर दिया। तब अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए श्री सुरेश चन्द्र डाकू पर झपटा और उसे पकड़ने में सफल हो गया।

इस मुठभेड़ में श्री सुरेश चन्द्र ने उत्कृष्ट वीरता तथा उच्च स्तर की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 18 मार्च, 1963 से दिया जायेगा।

वाई० डी० गण्डेविया, राष्ट्रपति के सचिव

रेल मंत्रालय

(रेलवे बोर्ड)

नई दिल्ली, दिनांक 3 नवम्बर 1965

सं० 60/इलैक०/240/3—सर्वसाधारण को अधिसूचित किया जाता है कि दक्षिण-पूर्व रेलवे के डंगोआपोसी पदापेहाड़-बांसपानी, पदापेहाड़-बड़ाजामदा, बड़ाजामदा-गुआ और बड़ाजामदा-बोलानी-खदान सेक्शनों पर 25 किलोवाट ए०सी० बिजली कर्षण की व्यवस्था करने के सम्बन्ध में सभी समपारों पर सड़क तल से 4.67 मी० (15'4—") ऊंचे ऊंचाई गेज लगाए जा रहे हैं ताकि वाहनों में बहुत अधिक ऊंचाई तक लदा हुआ सामान बिजली संचारित कर्षण तारों के साथ न छुए या इतने नजदीक न हो जाए कि खतरा पैदा हो जाए। इसलिए सर्वसाधारण को अधिसूचित किया जाता है कि वे सामान लादते समय ऊपर निर्धारित ऊंचाई का पालन करें और इत्मीनान कर लें कि जो सामान सड़क वाहनों में ढोया जाता है वह किसी भी हालत में, ऊंचाई गेज का अतिक्रमण न करने पाए।

बहुत अधिक ऊंचाई तक सामान लादने में निम्नलिखित खतरे हैं :—

(1) ऊंचाई-गेज को खतरा और इसके फलस्वरूप सड़क तथा रेलवे लाइन में रुकावट आना।

(2) ढोए जाने वाले सामान और उपस्कर या स्वयं वाहन को खतरा।

(3) बिजली संचारित संवाहकों से छू जाने या खतरनाक निकटता तक पहुंच जाने से आग लगने का खतरा या जान जाने की जोखिम।

पी० चै० मैथ्यू
सचिव, रेलवे बोर्ड

सिंचाई व बिजली मंत्रालय

संकल्प

नई दिल्ली, दिनांक 22 सितम्बर 1965

सं० वि० का० 5-510 (19)/65—यमुना तक अलवर के पूर्व के क्षेत्रों में भारी तथा गहन वर्षा के कारण राजस्थान में तथा उत्तर प्रदेश के आगरा और मथुरा जिलों में बहुत बड़े क्षेत्र भारी बाढ़ों से जल-प्लावित हो गए और उनको हानि पहुंची। इस क्षेत्र में निर्माणाधीन गोवर्धन नाले की क्षमता पर्याप्त दिखाई नहीं देती। इसकी ओर इस क्षेत्र में से गुजर रहे बहुत-से रेल-पथों के प्रभाव की जांच करने के लिए तथा राजस्थान व उत्तर प्रदेश के इस भाग में भविष्य में बाढ़ों को रोकने के लिए उपयुक्त

प्रतिकारक उपायों को सुझाने के लिए एक विशेषज्ञ समिति स्थापित करने का निर्णय किया गया है ।

2. समिति में निम्नलिखित होंगे :—

अध्यक्ष

1. श्री जफ्फर अली,
सलाहकार, सिंचाई व बिजली मंत्रालय,
अदिकमत, हैदराबाद ।

सदस्य

2. मुख्य अभियन्ता (सिंचाई),
उत्तर प्रदेश, लखनऊ ।
3. मुख्य अभियन्ता, सिंचाई,
(यमुना बराज) पंजाब, चण्डीगढ़ ।
4. मुख्य अभियन्ता, सिंचाई,
राजस्थान, जयपुर ।
5. मुख्य अभियन्ता, पश्चिमी रेलवे, बम्बई,
6. संयुक्त निदेशक (बाढ़),
गवेषणा, अभिकल्प तथा मानक संगठन,
लखनऊ ।

सदस्य-सचिव

7. मुख्य अभियन्ता (बाढ़ नियंत्रण),
केन्द्रीय जल तथा विद्युत् आयोग,
नई दिल्ली ।

3. इस समिति के विचारार्थ विषय निम्नलिखित होंगे :—

1. अलवर के पूर्व में यमुना नदी तक के क्षेत्र तथा फतेहपुर सीकरी में जल निकास समस्या का अध्ययन करना ।
2. वर्तमान निकास प्रणाली में सुझावों का सुझाव देना ।
3. इस क्षेत्र को बाढ़ क्षति से बचाने के लिए किसी अन्य नालों के निर्माण का सुझाव देना ।
4. समिति अपनी रिपोर्ट तीन महीनों के भीतर प्रस्तुत करेगी ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रतिलिपि उत्तर प्रदेश, पंजाब और राजस्थान की राज्य सरकारों, भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, प्रधान मंत्री सचिवालय, राष्ट्रपति के निजी और सैनिक सचिव, भारत के नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक, योजना आयोग, लोक सभा/राज्य सभा सचिवालय और संसद् कार्य विभाग को भेज दी जाए ।

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जाए और उत्तर प्रदेश, पंजाब और राजस्थान की राज्य सरकारों से प्रार्थना की जाए कि वे इसको आम सूचना के लिए राज्य के राजपत्रों में प्रकाशित कर दें ।

पी० आर० अहूजा, संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 30th October 1965

No. 92-Pres./65.—The President is pleased to award the President's Police and Fire Services Medal for gallantry to the undermentioned officer of the West Bengal Police :—

Name of the officer and rank

Shri Iswarman Rai,
Assistant Commandant (*Officiating*),
India Reserve Battalion,
West Bengal.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

At about 0330 hours on the 17th March 1965, a Pakistani Army unit armed with automatic weapons launched a heavy attack on the Indian Post at. Tinbigha, an Indian corridor in the District of Cooch Behar. Shri Iswarman Rai, Assistant Commandant, who had gone there on an inspection tour, resisted the enemy with the small police force at the post, and by placing the two L.M.G. of the post at strategic points, prevented the enemy from making any advance. During the heavy firing, Shri Rai moved from trench to trench and encouraged his men. On the 18th March, when reinforcements reached Tinbigha Shri Rai felt that unless the enemy positions were made untenable, they, would overwhelm the Indian position. He decided to cross Tinbigha to a point behind the enemy positions and to counter attack from the rear. Accordingly on the night of 18th March, he made an attempt but could not succeed owing to heavy enemy fire. He made another attempt the next night and succeeded in reaching Jikabari with his men despite enemy fire. Shri Rai concealed his position till the day break and then fired at the enemy positions. Surprised by this, the enemy threw their full weight against Shri Rai's position at Jikabari and opened heavy fire with 3" mortar. M.M.Gs. and other automatic weapons. The small police party under Shri Rai did not give way and faced the enemy with courage and determination.

During this operation, Shri Iswarman Rai displayed conspicuous gallantry and leadership and repeatedly risked his life in defending Indian territory.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the President's Police and Fire Services Medal.

No. 93-Pres./65.—The President is pleased to award the President's police and Fire Services Medal for gallantry to the undermentioned officer of the West Bengal Police :—

Name of the officer and rank

Shri Surjan Singh Gill.
Inspector of Police (*Officiating*),
4th Battalion, West Bengal Rifles,
West Bengal.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

In order to check illegal infiltration by Pakistani nationals including army personnel, Shri Surjan Singh Gill, Inspector of Police, was detailed to establish a strong base at Tinbigha. On the night of 13th/14th March, a large number of civilians and armed personnel rushed the Indian police posts at Tinbigha and at the same time the Pakistani armed forces opened fire from he Pakistani enclave of Dahagram. The police returned the fire but in order to avoid civilian casualties, Shri Gill had to stop firing, and a large number of infiltrators crossed over the border through Tinbigha. On the 17th March 1965, at about 0330 hours, the Indian police posts at Tinbigha were subjected to heavy attack by the Pakistani army. The small police party under the command of Shri Gill returned the fire effectively. Later in the morning Shri Iswarman Rai, Assistant Commandant, who had gone there on inspection, took the command of the Police posts. Shri Gill, however, continued to go round the sentry posts and pickets despite heavy enemy fire and inspired the small police party to face the numerically superior enemy. Again on the night of 19th March, the enemy launched another attack with 3" mortars and MMGs. Though the police personnel had never before faced weapons used by the enemy, they continued to fight back effectively under the able leadership of Shri Gill.

When Shri Rai crossed over to Jikabari and attacked the enemy positions from the rear, Shri Gill sited his LMGs so as to bring the enemy under cross fire. In the absence of any means of communication with the outpost at Jikabari, Shri Gill himself went there, under constant firing from the enemy, to establish liaison with Shri Iswarman Rai. Throughout this period Shri Gill moved his machine gun sites and attacked the enemy from new positions. By the 29th March 1965, he obtained complete command over the forward enemy positions and succeeded in destroying their two observation posts. By his outstanding courage and leadership Shri Gill not only boosted the morale of the police force but was also instrumental in making the Tinbigha positions impenetrable to the enemy.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the President's Police and Fire Services Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 29th March 1965.

No. 94-Pres./65.—The President is pleased to award the President's Police and Fire Services Medal for gallantry to the undermentioned officer of the West Bengal Police :—

Name of the officer and rank

Shri Kedar Singh Bisth.
Inspector of Police (*Officiating*),
2nd Battalion, State Armed Police, Barrackpore.
West Bengal.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the morning of 17th March 1965, armed forces from across the border launched an attack all along the Indian border near Mekliganj and Haldibari in West Bengal. The main target of the enemy was on the advance post of Jhar Singeswar which was set up to check infiltration. Shri Kedar Singh Bisth, Inspector of Police, who had only taken charge of the out-post the previous day, immediately deployed his small police party to check the advance of the enemy. Despite heavy firing from across the border. Shri Bisth reconnoitred the area, started extending his L.M.G. position and by the midnight of the 18th March, completed communication trenches. At about 0245 hours the enemy launched a fresh wave of attack on this out-post with Bren Guns, 2" and 3" mortars and rifle grenades. Undeterred by the heavy firing from the numerically superior enemy force, Shri Bisth took the only LMG with the police party and by accurate fire forced the enemy to withdraw. During the heavy firing, Shri Bisth observed that the enemy was using a big Simul tree for ranging their 2" mortars on the police out-post. He at once went forward with his men in the courage of heavy firing from across the border and cut down the tree. As reinforcements and supply were not available and there was every possibility of the enemy coming up to the river bank to cut the only supply route of the police post, Shri Bisth decided to cross the channel and set up a position on the other side of the river. Shri Bisth loaded his arms and ammunition in an unmanned boat and swam across the channel with his men at night.

During this encounter with the forces from across the border, Shri Kedar Singh Bisth exhibited conspicuous gallantry, initiative and devotion to duty of the highest order in utter disregard for his personal safety.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the President's Police and fire Services Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 20th March 1965.

No. 95-Pres./65.—The President is pleased to award the President's Police and Fire Services Medal for gallantry to the undermentioned officer of the West Bengal Police :—

Name of the officer and rank

Shri Dalip Singh,
Head Constable (*Officiating*),
3rd Battalion, West Bengal Rifles, Barrackpore,
West Bengal.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

During the disturbances on the Indian border near Cooch Behar in West Bengal, a Pakistani Army force armed with automatic weapons launched a heavy attack on the Indian post at Tinbigha. On the 18th March 1965, Assistant Commandant Rai decided to cross Tinbigha to a point behind the enemy positions and to counterattack from the rear. Head Constable Dalip Singh was ordered to proceed to Satirpul with his Platoon under cover of darkness. Head Constable Dalip Singh boldly led his Platoon and succeeded in reaching Satirpul despite heavy firing from the enemy. After spending the day at Satirpul Head Constable Dalip Singh set out for Jikabari to counteract the enemy position. Soon after Head Constable Dalip Singh reached Jikabari the enemy attacked an Indian border village and set fire to two houses. Head Constable Dalip Singh immediately launched a counter attack with half of his men and drove away the invaders by accurate fire from his sten gun at close range. This gallant action of Head Constable Dalip Singh dissuaded the enemy from attacking this village again. The enemy, however, continued heavy firing on Jikabari from 22nd to 29th March 1965. During these difficult days, Head Constable Dalip Singh very ably led his men and thwarted every attempt of the enemy to advance into Indian territory.

Thus Head Constable Dalip Singh exhibited conspicuous gallantry, initiative and devotion to duty of the highest order in utter disregard of his personal safety.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the President's Police and Fire Services Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 29th March, 1965.

No. 96-Pres./65.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the West Bengal Police :—

Name of the officer and rank

Shri Johan William Goodall,
Commandant,
2nd Battalion, Eastern Frontier Rifles,
West Bengal.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the morning of 17th March 1965, the Indian bases in Mekliganj, Cooch Behar district, were subjected to heavy attack with automatic weapons by the Pakistani forces from across the border. Commandant John William Goodall observed the weakness of Indian defence position at Phulkadabari and immediately collected civilian volunteers and improved the defences so that the platoon was able to hold out in that exposed position throughout the long drawn encounters with the enemy. On the 17th and 18th March, the enemy tried to advance by putting the Indian bases and their supply routes under heavy fire but the attempt was thwarted by the small police party. The next day armed civilians crossed the border and set fire to a village in the Kharkharia area. Shri Goodall immediately rushed towards the area and on his way he noticed that a section of the Eastern Frontier Rifles had been ambushed from two sides with Bren Gun fire. Shri Goodall immediately sent for reinforcements but in the meantime a third Bren gun from across the border started firing at the small police party making their position precarious. On receipt of reinforcements Shri Goodall engaged the third Bren gun of the enemy and enabled the trapped police party to withdraw to a safer position. Later Shri Goodall was detailed to command the police forces at the Mekliganj. Shri Goodall felt that the enemy had resorted to heavy firing from the left possibly to cover infiltration through the right flang across the river. He hurriedly organised new posts at places hardly 150 yards from the border and succeeded in sending supplies to these posts despite heavy fire from the enemy.

During all this period, Shri Johan William Goodall showed conspicuous gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal.

No. 97-Pres./65.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the West Bengal Police :—

Name of the officer and rank

Shri Ratan Singh,
Inspector of Police (*Officiating*),
5th Battalion, West Bengal Rifles, Barrackpore,
West Bengal.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

In March, 1965, when Pakistani armed forces launched an attack all along the Cooch Behar border. Shri Ratan Singh, Inspector of Police, was posted at Bagdogra border out-post. On 21st March 1965, the enemy sent in armed civilians under cover of Bren gun fire to loot and burn Indian villages. Realising the gravity of the situation, Shri Ratan Singh with the help of another Inspector and two policemen organised a small ambush and intercepted these armed civilians and inflicted casualties on them. In the meantime another group of about a hundred armed civilian tried to enter the territory under the cover of fire provided by the regular Pakistan army from across the border. Shri Ratan Singh opened fire on these armed infiltrators and pushed them across the border inflicting very heavy causalties. This gallant action of Shri Ratan Singh prevented the violation of Indian territory. By the 22nd March 1965, Shri Ratan Singh had obtained complete command over the situation. After making the approach road of the Post safe from the enemy, Shri Ratan Singh reconnoitred the area and spotted new forward positions from where the enemy could be repelled.

During this period Shri Ratan Singh exhibited conspicuous courage, leadership and tactical competence.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 22nd March 1965.

No. 98-Pres./65.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the West Bengal Police :—

Name of the officer and rank

Shri Nikhilesh Dutta,
Sub-Inspector of Police,
4th Battalion, West Bengal Rifles,
West Bengal.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

In March, 1965, armed forces from across the border launched an attack all along the Indian border near Mekliganj and Haldibari in West Bengal. The main target of the enemy was an advanced post at Jhar Singeswar which had been set up to check infiltration. While the police forces were fighting the enemy, their stocks of ammunition and rations were nearly exhausted. Shri Nikhilesh Dutta was detailed to carry ammunition and rations to the advanced post and despite continuous heavy firing from the enemy, he took the much needed ammunition and rations to the advance post on the morning of 19th March. Shri Dutta took such journeys a number of times. When the Base Commander could not supply more ammunition to the advanced post. Shri Dutta carried a message in the midst of heavy firing to the Company Commander. The same afternoon when the advanced post was subjected to heavy enemy

fire with mortars and rifle grenades, Shri Dutta had to swim across a channel in utter disregard of his own safety, to deliver a message to the post. Again on the 22nd March, when Par Mekliganj border out-post ran short of ammunition, Shri Dutta carried ammunition to the out-post.

During this period Shri Nikhilesh Dutta exhibited gallantry and exemplary devotion to duty in the performance of which he had constantly to expose himself to danger.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 22nd March 1965.

No. 99-*Pres.*/65.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the West Bengal Police :—

Name of the officer and rank

Shri Maina Ram Cachari,
Havildar,
2nd Battalion, Eastern Frontier Rifles, Midnapore,
West Bengal.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the morning of 17th March, 1965, armed forces from across the border launched an attack all along the Indian border near Mekliganj and Haldibari in West Bengal. During the course of this attack the border out-post Kharkharia which was under the command of Havildar Maina Ram Cachari came under heavy fire from the enemy. Havildar Cachari organised the defences and engaged the invaders with accurate fire and restricted their activities. The next day, the invaders set fire to two villages. In order to put out the fire, Havildar Cachari had to pass through an open field, and his party was ambushed and confronted with heavy Pren gun fire from two sides. The small police party was virtually pinned down by the enemy in the open field. Realising the gravity of the situation, Havildar Cachari sent two of his men to Kharkharia to ask for diversionery fire. The Commandant at once brought reinforcements and surprised the enemy with heavy firing, as a result of which the enemy guns were silenced for a while. Taking advantage of this lull, Havildar Cachari managed to withdraw his men to the border out-post.

During this encounter with the enemy forces, Havildar Maina Ram Cachari exhibited gallantry, leadership and devotion to duty of a high order.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 18th March, 1965.

The 4th November 1965

No. 100-*Pres.*/65.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Fire Brigade of Hindustan Aeronautics Limited, Bangalore :—

Name of the Officer and rank

Shri Ponnani Ramakrishnan Vasudevan,
Officer in charge of Fire Brigade,
Hindustan Aeronautics Limited,
Bangalore.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the 5th February, 1964, a fire broke out in the Digital Computor Room of the Engineering Department of the Hindustan Aeronautics Limited due to the chokes of the fluorescent lamps in the room getting overheated. The cause and the location of the fire could not be easily determined on account of the structure of the roof and the heavy dense smoke that enveloped the area. The situation demanded prompt action if damage was to be avoided to the valuable equipment in the Digital Computor Room and to the adjoining library. Shri Ponnani Ramakrishnan Vasudevan promptly located the place of the fire and the cause and organised the fire fighting so effectively that the fire was brought under control within fifteen minutes. In doing so, he not only saved the Company's valuable property but also everted possible danger to the lives of men on duty.

In this operation, Shri Ponnani Ramakrishnan Vasudevan showed courage and devotion to duty of a high order.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carried with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 5th February, 1964.

No. 101-*Pres.*/65.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Punjab Police :—

Name of the Officer and rank

Shri Suresh Chander,
Assistant Sub-Inspector of Police,
Gurgaon District,
Punjab.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the evening of the 18th March, 1963, Shri Suresl Chander, Assistant Sub-Inspector of Police, received information of the presence of three notorious dacoits in the vicinity of village Badkhal (district Gurgaon). Shri Suresh Chander collected a small posse of Constables and local people and immediately proceeded to Badkhal. On reaching the village, the Assistant Sub-Inspector learnt that the dacoits had shifted to the nearby forest area of Bhankri. Shri Suresh Chander along with his party started combing the entire forest area and spotted the dacoits in a depression. He split up his party in three groups and took positions. When called upon to surrender, the dacoits fired at Shri Suresh Chander and narrowly missed him. When the Police returned the fire, Yasin, the gang-leader, who was armed with a .303 rifle, rushed towards Shri Suresh Chander. Undeterred by the bold and desperate attack of the dacoit, Shri Suresh Chander quickly fired at him with his revolver and injured him. Shri Suresh Chander then leapt upon the dacoit, without caring for his own safety, and succeeded in apprehending him.

In this encounter Shri Suresh Chander exhibited conspicuous gallantry and devotion to duty of a high order.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 18th March, 1963.

Y. D. GUNDEVIA, Secy. to the President.

MINISTRY OF FOOD AND AGRICULTURE

(Department of Agriculture)

New Delhi-1, the 2nd November 1965

RESOLUTION

*No. F.*6-7/64/-*AE.*—The Government of India have decided that Shri H. G. Patil, Branch Secretary, Gokhale Education Society Kosbad Centre, Kosbad-Hill Station, Gholvad (Western Rly.) District Thana (Maharashtra), will also be a member of the National Committee on the Development of Extension Training Programme constituted under this Department's Resolution No. 6-7/64-AE, dated the 2nd September, 1965.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to :—

1. All the State Governments/Union Territories.
2. All Ministries of the Government of India including Planning Commission, Prime Minister's Sectt.; President's Sectt.; Vice-President's Sectt.; Parliament Sectt.; Department of Parliamentary Affairs; Department of Atomic Energy and Department of Food.
3. To all the Members of the Committee.
4. Shri H. G. Patil, Branch Secretary, Gokhale Education Society Kosbad Centre, Kosbad Hill Station, Gholvad (Western Rly.), District Thana (Maharashtra).
5. All attached and subordinate offices of the Department of Agriculture, Ministry of Food & Agriculture.
6. Pay & Accounts Officers, Ministry of Food & Agriculture.
7. Accountant General, Commerce, Works & Misc., New Delhi.
8. Directorate of Publicity, Ministry of Food & Agri.
9. Press Information Bureau (Shri C. L. Bhardwaj).
10. P. S. to Minister of Food & Agri./Dy. Minister (Agri.)/Dy. Minister (Food)/D.G. I.A.A./J.S.(A)/Director, Extension Training, Directorate of Extension.
11. Guard File.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

B. SIVARAMAN, Secy.

MINISTRY OF EDUCATION

New Delhi, the 30th October 1965

No. 16/46/64-*S.*—In exercise of the powers conferred by the proviso to article 309 of the Constitution, the President hereby makes the following amendments to the Survey of India Class I (Recruitment) Rules published by the late Ministry of Scientific Research & Cultural Affairs in their notification No. 16-19/60-S, dated the 1st July, 1960, namely :—

1. These rules may be called the Survey of India Class I (Recruitment) Amendment Rules, 1965.

2. In the Survey of India Class I (Recruitment) Rules, after rule 20, the following rule shall be inserted, namely :—

"20A. (1)Every person appointed to the service after the commencement of the Survey of India Class I (Recruitment) Amendment Rules, 1965, shall, if so required, be liable to serve in any defence service or post connected with the defence of India, for a period of not less than four years including the period, if any, spent on training :

Provided that no such person,—

(i) shall be required to serve as aforesaid after the expiry of ten years from the date of appointment; or

(ii) shall ordinarily be required to serve as aforesaid after attaining the age of 40 years.

(2) The liability under this rule is in addition to and not in derogation of the liability imposed under any other rule."

*No.*16/46(1)/64-*S.*—In exercise of the powers conferred by the proviso to article 309 of the Constitution, the President hereby makes the following amendments to the Survey of India Class II (Recruitment) Rules published by the late Ministry of Scientific Research & Cultural Affairs in their notification No. 16-9/61-S, dated the 16th January, 1962, namely :—

1. These rules may be called the Survey of India Class II (Recruitment) Amendment Rules, 1965.

2. In the Survey of India Class II (Recruitment) Rules, after rule 20, the following rule shall be inserted, namely :—

"20A. (1) Every person appointed to the service after the commencement of the Survey of India Class II (Recruitment) Amendment Rules, 1965, shall, if so required, be liable to serve in any defence service or post connected with the defence of India, for a period of not less than four years including the period, if any, spent on training :

Provided that no such person,—

(i) shall be required to serve as aforesaid after the expiry of ten years from the date of appointment; or

(ii) shall ordinarily be required to serve as aforesaid after attaining the age of 40 years.

(2) The liability under this rule is in addition to and not in derogation of the liability imposed under any other rule."

M. M. JAIN, Under Secy.

New Delhi, the 2nd November 1965

No. 22(11)/62-*SRII.*—The Government of India have decided to set up a National Committee for Geography consisting of the following :—

1. Prof. S. P. Chatterjee, *Chairman*
 Head of the Deptt. of Geography,
 Calcutta University,
 Calcutta.
2. Brig. Gambhir Singh,
 Surveyor-General of India,
 Dehra Dun.
3. Prof. George Kuriyan,
 Head of the Deptt. of Geography,
 Delhi University,
 Delhi.
4. Dr. R. Lahiri,
 Department of Geography,
 Calcutta University,
 Calcutta.
5. Prof. Mohammad Shafi.
 Department of Geography,
 Muslim University,
 Aligarh.
6. Prof. V. L. S. Prakasa Rao,
 Department of Geography,
 Osmania University,
 Hyderabad.
7. Prof. R. L. Singh,
 Department of Geography,
 Banaras Hindu University,
 Varanasi.

The functions of the National Committee for Geography will be as follows :—

(a) to promote the study of geographical problems in India;

(b) to initiate and co-ordinate geographical researches in India requiring international co-operation, and to provide for their scientific discussion and publication in the country;

(c) to liaise with the International Geographical Union and other organisations concerned with the advancement of geography and generally to support and assist international activities likely to contribute to the development of geography in any of its aspects—pure, applied or educational.

M. M. MALHOTRA, Dy. Secy.

MINISTRY OF RAILWAYS

(Railway Board)

New Delhi, the 3rd November 1965

No. 60/*Elec*/240/3 —It is hereby notified for general information that in connection with the introduction of 25 KV A. C. Electric Traction, over the sections Dangoaposi-Padapahar-Banspani, Padapahar-Barajamda, Barajamda-Gua and Barajamda-Bolani-Khadan of the South Eastern Railway, Height Gauges are being erected at all the leval crossings with a clear height 4.67m (15'—4") above road level with a view to prevent loads of excessive height from coming into contact or dangerous proximity to live traction wires. Public are hereby notified to observe the height specified above for the purpose of loading vehicles and to see that the loads carried in road vehicles do not infringe the Height Gauge under any circumstances.

The dangers of a load of excessive height are as follows :—

(i) Danger to the height gauge and consequent obstruction to the road as well as the railway line.

(ii) Danger to the materials or equipment carried or the vehicles itself.

(iii) Danger of fire and risk of life due to the contact or dangerous proximity to the live conductors.

P. C. MATHEW, Secy. Railway Board.

MINISTRY OF LABOUR & EMPLOYMENT

New Delhi, the 4th November 1965

No. 516(207)/65-*Fac.*—It is hereby notified that the "Office of the Chief Adviser Factories" will be known as the "Directorate General of Factory Advice Service and Labour Institutes", with immediate effect.

VIDYA PRAKASH, Dy. Secy.

PRINTED IN INDIA BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS FARIDABAD AND PUBLISHED BY THE MANAGER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1965.